कहाँ और कब?

पहला चरण
बालाघाट से भोपाल
15 – 25 नवंबर 2026

दूसरा चरण
भोपाल से दिल्ली
5 – 13 दिसंबर 2026

‘समान शिक्षा जनयात्रा’ दो चरणों में होगी:



जनयात्रा के दौरान क्या-क्या होगा?

यात्रा मार्ग के विभिन्न स्थानों पर, समान शिक्षा जनयात्रा के तीन प्रमुख घटक होंगे:



आप क्या कर सकते हैं?

आप भी इस राष्ट्र निर्माण प्रयास का हिस्सा बन सकते हैं।
भाग लेने के कई तरीके हैं:



समान शिक्षा जनसंकल्प

जनयात्रा के पहले चरण के दौरान लोगों और हितधारकों से प्राप्त सुझावों, अनुभवों को एक साथ लाकर 'समान शिक्षा जनसंकल्प' तैयार किया जाएगा। यह जनसंकल्प समान और अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा के लिए लोगों की आकांक्षाओं और उनके सामूहिक संकल्प को दर्शाएगा। इसे 25 नवंबर 2026 को भोपाल में आयोजित एक सार्वजनिक कार्यक्रम में प्रस्तुत किया जाएगा।

आइए, हम सब साथ आएं

जिस बच्चे की क्षमताएं विकसित नहीं हो पातीं, वह न केवल उस बच्चे और उसके परिवार के लिए, बल्कि हमारे देश के लिए भी एक नुकसान है। हर बच्चे की क्षमता, असल में भारत की ही क्षमता है। इसलिए आइए, हम सब साथ आएं—किसी के विरोध में नहीं, बल्कि हर बच्चे के लिए। आइए, हम सब मिलकर यह सुनिश्चित करें कि हमारे सभी बच्चों को समान और अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा, सुविधाएं और अवसर मिलें।
क्योंकि 'समान शिक्षा' केवल शिक्षा से जुड़ा मुद्दा नहीं है।यह राष्ट्र-निर्माण के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता है।

जनयात्रा के बाद क्या होगा?

जनयात्रा इस प्रयास का अंत नहीं है, बल्कि यह व्यापक जन-भागीदारी की शुरुआत है। जनयात्रा के माध्यम से निर्मित हुई जागरूकता और जिम्मेदारी की भावना से उम्मीद है कि अधिक नागरिक आगे आएंगे और अपने आस-पास के सरकारी स्कूलों के साथ मिलकर काम करेंगे। 'समान शिक्षा जनसमिति' ने उनकी मदद के लिए कुछ साधन और तरीके तैयार किए हैं, जिनमें शामिल हैं: समान शिक्षा रजिस्टर • प्रेरक प्रशिक्षण • IT-आधारित स्वयंसेवक सहायता • स्कूल विकास योजना • फॉलो-अप (निगरानी और समीक्षा) की व्यवस्था, आदि.। जैसे-जैसे अधिक नागरिक, अभिभावक, शिक्षक और समुदाय इसमें शामिल होंगे, शिक्षा और सुविधाओं को बेहतर बनाने के लिए लोगों की आवाज़ और भी मजबूत होगी। यह व्यापक भागीदारी और जन-आवाज़ स्कूली शिक्षा को अधिक प्राथमिकता दिलाने में मदद कर सकती है, जिससे आने वाले वर्षों में सार्वजनिक निवेश और बजट आवंटन में वृद्धि हो सकेगी।

वेबसाइट:equaleducation.in
संपर्क: _____
ईमेल : contact@equaleducation.in

अगर आप 'समान शिक्षा प्रयासों' से जुड़ना चाहते हैं तो इस व्हाट्सएप चैनल से जुड़ें'

सोशल मीडिया पर हमें फ़ॉलो करने के लिए QR कोड स्कैन करें।

समान शिक्षा

समान शिक्षा • समान अवसर • उज्वल भविष्य

समान शिक्षा जनयात्रा





आइए। साथ चलें। अपनी बात रखें। समाधान और सुधार का हिस्सा बने।

समान शिक्षा क्यों?

भारत के पास दुनिया में सबसे ज्यादा मानव संसाधन, दुनिया में सबसे ज्यादा जनसँख्या, उपलब्ध है, और साथ ही यहाँ प्राकृतिक संसाधनों की भी प्रचुरता है। फिर भी, इतनी अपार संभावनाओं के बावजूद, मानव विकास और कल्याण के कई महत्वपूर्ण पैमानों पर हमारा देश अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर पीछे की पंक्ति में खड़ा नजर आता है।

ऐसा क्यों है?

अगर हम गहराई से देखें, तो एक बुनियादी समस्या सामने आती है: हमारे देश के एक बड़े हिस्से के लोग अपनी क्षमताओं का पूर्ण विकास नहीं कर पाते हैं, और इस वजह से वे देश के संर्वांगीण विकास में और राष्ट्र निर्माण में अपनी पूरी क्षमता के साथ योगदान देने में असमर्थ रह जाते हैं। इस कारण हमारा देश उसकी क्षमता के अनुरूप विकास नहीं कर कर पा रहा है।

लोगों को अपनी पूरी क्षमता तक पहुँचने में मदद करने का सबसे सशक्त माध्यम शिक्षा है?

हमारे अधिकांश बच्चे सरकारी स्कूलों में पढ़ते हैं, जहाँ अक्सर अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा, जरूरी सुविधाएं और अवसर नहीं मिल पाते। नतीजतन, कई बच्चे अपनी क्षमताओं का पूरा विकास नहीं कर पाते हैं। सधन परिवारों के बच्चों को खासकर वे जो शहरों में रहते हैं और जिनके माता-पिता पढ़े-लिखे हैं, आमतौर पर बेहतर शिक्षा, सुविधाएं, मार्गदर्शन और अवसर मिल जाते हैं। लेकिन गरीब, ग्रामीण और वंचित पृष्ठभूमि से आने वाले करोड़ों बच्चों को ऐसे समान अवसर नहीं मिल पाते।

एक सभ्य समाज में किसी बच्चे का भविष्य उसके जन्म की परिस्थितियों से तय नहीं होना चाहिए। जब हमारे अधिकांश बच्चों को अपनी क्षमताओं को विकसित करने के लिए जरूरी शिक्षा और अवसर नहीं मिलते, तो यह सिर्फ उनका व्यक्तिगत नुकसान नहीं है। बल्कि, यह पूरे देश के लिए मानव क्षमता का नुकसान है।

इसलिए, अगर हम चाहते हैं कि हमारा देश सर्वांगीण विकास करे और एक मजबूत राष्ट्र बने, तो हमें यह सुनिश्चित करना होगा कि हर बच्चे को समान और अच्छी गुणवत्ता वाली शिक्षा, सुविधाएं और अवसर मिलें।

शिक्षा एक साझा ज़िम्मेदारी है

हमारे स्कूलों में अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा और सुविधाएं सुनिश्चित करने के लिए कौन ज़िम्मेदार है?

सरकार और प्रशासन की निश्चित रूप से बड़ी ज़िम्मेदारि हैं। लेकिन वे ही एकमात्र हितधारक (स्टेकहोल्डर) नहीं हैं।

बच्चे, शिक्षक, माता-पिता, स्कूल प्रबंधन समितियाँ, आस-पड़ोस के समुदाय, प्रशासन, सरकार और व्यापक समाज

ये सभी शिक्षा के क्षेत्र में हितधारक हैं। हर एक की भूमिका है। हर एक की ज़िम्मेदारी है। और हर एक को उस ज़िम्मेदारी को निभाना चाहिए।

आमतौर पर, जब सरकारी स्कूलों में कमियां होती हैं, तो केवल सरकार और प्रशासन को ही ज़िम्मेदार ठहराया जाता है। समान शिक्षा जनसमिति का मानना है कि स्थायी सुधार तभी संभव है जब सभी हितधारक अपनी ज़िम्मेदारियों को पहचानें और उन्हें पूर्ण करने के लिए मिलकर काम करें। समान शिक्षा इसी दिशा में लोगों का एक सामूहिक प्रयास है।



(EQUAL EDUCATION CAMPAIGN)

'समान शिक्षा अभियान' क्या है?

'समान शिक्षा अभियान' की शुरुआत 'समान शिक्षा जनसमिति' द्वारा अप्रैल 2025 में की गई थी। इसका उद्देश्य हमारे सभी बच्चों के लिए समान और अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा, सुविधाएं और अवसर सुनिश्चित करना है।

'समान शिक्षा जनसमिति' जागरूक नागरिकों का एक समूह है जो इस उद्देश्य के लिए प्रतिबद्ध है। इस अभियान ने महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़ और तेलंगाना के कुछ दर्जन सरकारी स्कूलों के साथ 2025 में काम करना शुरू किया।

'समान शिक्षा जनसमिति' कैसे काम करती है?

1. **पड़ोस के सरकारी स्कूल की पहचान करना:** 'समान शिक्षा जनसमिति' के सदस्य और वॉलंटियर्स अपने आस-पास के किसी सरकारी स्कूल की पहचान करते हैं।

2. **स्थानीय समुदाय को एकजुट करना:** वे दोस्तों, रिश्तेदारों, परिचितों और अन्य स्थानीय निवासियों से बात करते हैं। वे उन्हें बताते हैं कि स्कूल में शिक्षा की गुणवत्ता, सुविधाओं और बच्चों को मिलने वाले अवसरों को बेहतर बनाने के लिए मिलकर काम करना क्यों जरूरी है।

3. **शिक्षकों के साथ मिलकर काम करना:** वे शिक्षकों से मिलते हैं, उनके अनुभवों और चुनौतियों को समझते हैं, और चर्चा करते हैं कि स्कूल को बेहतर बनाने के लिए सब मिलकर कैसे काम कर सकते हैं।

4. **अभिभावकों को जोड़ना और सशक्त बनाना:** वे स्कूल में पढ़ने वाले बच्चों के माता-पिता और अभिभावकों से मिलते हैं। वे उन्हें बताते हैं कि उनके बच्चों को अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा और अवसर पाने का अधिकार है। साथ ही, वे उन्हें उनकी अपनी भूमिका और जिम्मेदारियों (जिस में'स्कूल प्रबंधन समिति' या SMC में भागीदारी भी शामिल है) के प्रति जागरूक करते हैं। सबसे महत्वपूर्ण बात यह है कि वे अभिभावकों के मन में यह विश्वास और उम्मीद जगाते हैं कि उनके बच्चे भी सरकारी स्कूलों में अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा, सुविधाएं और अवसर पा सकते हैं।

5. **'समान शिक्षा टीम' का गठन करना:** एक 'समान शिक्षा टीम' बनाई जाती है, जिसमें शिक्षक, अभिभावक/SMC सदस्य, स्थानीय समुदाय के लोग और 'समान शिक्षा प्रेरक' शामिल होते हैं।

6. **कमियों की पहचान करना और 'स्कूल विकास योजना' (SDP) तैयार करना:** पूरी टीम मिलकर शिक्षा, सुविधाओं और अवसरों में मौजूद कमियों की पहचान करती है और स्कूल के लिए एक 'स्कूल विकास योजना' (School Development Plan - SDP) तैयार करती है।

7. **स्कूल और समुदाय स्तर पर काम शुरू करना:** 'स्कूल विकास योजना' में शामिल ऐसी गतिविधियाँ, जिन्हें स्कूल, अभिभावक या समुदाय द्वारा किया जा सकता है, उन्हें उनके अपने-अपने स्तर पर शुरू किया जाता है।

8. **अधिकारियों के समक्ष 'अधिकारों का प्रतिवेदन' (Representation of Rights) प्रस्तुत करना:** जिन कार्यों के लिए स्थानीय निकाय (Local Body) या ज़िला प्रशासन से स्वीकृति या राशि की आवश्यकता होती है, उनके लिए संबंधित अधिकारियों को एक 'अधिकारों का प्रतिवेदन' सौंपा जाता है। इस में उनसे उन जरूरी कार्यों को मंजूरी देने और लागू करने का अनुरोध किया जाता है।

9. **राज्य-स्तर से की जाने वाले मामलों को सरकार के समक्ष ले जाना:** राज्य स्तर से मंजूरी, राशि का नियोजन, या नीतिगत हस्तक्षेप की आवश्यकता वाले सभी मुद्दों को 'अधिकारों के प्रतिवेदन' (Representation of Rights) के माध्यम से राज्य सरकार के समक्ष रखा जाता है।

10. **सुधार आने तक प्रयास जारी रखना:** 'समान शिक्षा वॉलंटियर्स' (Equal Education Volunteers) स्कूल और समुदाय के स्तर पर जो कुछ भी संभव है, वह करते रहते हैं; साथ ही, जिन कार्यों के लिए उच्च स्तर से हस्तक्षेप की आवश्यकता होती है, उनके लिए संबंधित अधिकारियों और सरकार से लगातार संपर्क बनाए रखते हैं।

इस तरह काम करते हुए, 'समान शिक्षा वॉलंटियर्स' अब तक जिन स्कूलों से जुड़े हैं, वहां उन्होंने छोटे से लेकर उल्लेखनीय स्तर तक के सुधार लाने में सफलता प्राप्त की है।

एक सकारात्मक और रचनात्मक दृष्टिकोण



समान शिक्षा जनयात्रा' क्या है?

स्कूलों में अपने काम के दौरान, 'समान शिक्षा जनसमिति' ने महसूस किया कि केवल अलग-अलग स्कूलों के साथ काम करना ही काफी नहीं है। समान शिक्षा का संदेश व्यापक समाज तक पहुँचना चाहिए, ताकि अधिक से अधिक नागरिक जागरूक हों, जिम्मेदारी लें और इस प्रयास का हिस्सा बनें। साथ ही, हाल के महीनों में सरकारी स्कूलों में शिक्षा की गुणवत्ता और सुविधाओं को लेकर सार्वजनिक चर्चा बढ़ी है।

शिक्षा को लेकर यह चिंता स्वागत योग्य और जरूरी है। हालाँकि, अब तक की ज्यादातर बातचीत कमियां निकालने और एक-दूसरे पर दोष मढ़ने तक ही सीमित होती दिखाई देती है। इस तरह के रवैये से एक देश के हित में और जरूरी पहल के प्रति भी लोगों में विरोध की भावना पैदा हो सकती है।

हमारा मानना है कि शिक्षा पर हो रही सार्वजनिक चर्चा को एक सकारात्मक, रचनात्मक और भागीदारीपूर्ण दिशा देने की जरूरत है। यह तब संभव है जब हम इस संदेश को सीधे लोगों तक ले जाएं और हर किसी को समाधान का हिस्सा बनने के लिए आमंत्रित करें। 'समान शिक्षा जनयात्रा' का यही उद्देश्य है।

'समान शिक्षा जनयात्रा' का लक्ष्य

समान और अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा की आवश्यकता के बारे में जन-जागरूकता पैदा करना, सभी संबंधित पक्षों (स्टेकहोल्डर्स) में जिम्मेदारी की भावना जगाना और समान शिक्षा के लिए एक जन-आवाज तैयार करना। यह जनयात्रा इन सभी को एक साथ लाने का प्रयास करती है:

छात्र • शिक्षक • अभिभावक • नागरिक • समुदाय • नागरिक समाज • प्रशासन • सरकार

एक साझा उद्देश्य के लिए: हर बच्चे के लिए समान और अच्छी गुणवत्ता की शिक्षा, तथा समान अवसर।

